17 कश्मीर

वीरेन्द्र मिश्र

(जन्म : 1933 ई., निधन : 1999 ई.)

वीरेन्द्र मिश्रजी का जन्म मरैन (मध्य प्रदेश) में हुआ था । ये आकाशवाणी के मानद प्रोड्यूसर रहे थे । ये नवगीत विधा के गीतकार थे और फिल्मों के लिए भी गीत लिखते थे । इनके मुख्य काव्य संग्रह हैं गीतम, अविराम, अचल, मधुवंती, लेखनी बेला, झुलसा है छाया नट-धूप में, काले मेघा पानी दे तथा शांति गन्धर्व । इन्हें देव पुरस्कार एवं निराला पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।

कश्मीर काव्य में कश्मीर के सौंदर्य एवं संस्कृति का परिचय कराया है ।

जहाँ बर्फ़ की राजकुमारी खोयी है स्वर-लहरी में
चलो चलें फूलों की घाटी में, नावों की नगरी में

सन सन सन सन सनन सनन, गाता फिरता गीत पवन
उड़ते हैं पंछी सैलानी, खिलता शालीमार चमन
भ्रमर बजाते शहनाई, किरनों की मालिन आई
झील किनारे वह डलिया भर धूप बिखेरे बजरी में

जंगल-जंगल होड़ लगी है तितली और टिटिहरी है
कभी हवा आ जाती है, नयी ग़जल गा जाती है
तब मखमली गलीचों पर कुछ मस्ती-सी छा जाती है
मौसम कभी बदलता है, सपना कभी मचलता है
चरवाहे की वंशी छिड़ती, नील गगन की छतरी में

पलछिन किसी बहाने से, गुजरे हुए जमाने से
बस्ती करती बात जहाँ है, दूर खड़े वीराने से
चश्मे जहाँ हिमानी हैं, फूल जहाँ रूमानी हैं
हिल-हिलकर कहते पत्तों से चाँद छुपा है बदली में

जल में खिलीं रुबाइयाँ, बजरों की अँगड़ाइयाँ
चले शिकारे, संग में चल दीं बागों की परछाइयाँ
प्रेम कथाएँ विल्हण की, कौन कहे गाथा मन की
झेलम सोयी तारोंवाले नभ की नील मसहरी में

'अमरनाथ' की राहों में 'शेषनाग' की बाँहों में
पश्मीना ध्वज फहर रहा है देवदारु की छाँहों में
मन जिसका गंभीर है, वह अपना कश्मीर है
दाग लगे ना देखो भारत की बर्फ़ीली पगड़ी में

चलो चलें फूलों की घाटी में, नावों की नगरी में !

शब्दार्थ

सैलानी सहेलगाह पर आये हुए यात्री, पर्यटक **चमन** बाग **भ्रमर** भौरा **झील** बड़ा तालाब, सरोवर **डलिया** बाँस का छोटा पात्र **आलम** दुनिया **सुरमई** सुरमे के रंग का, हल्का नीला रंग **मल्लाह** नाविक **टिटिहरी** एक पक्षी विशेष का नाम **पलछिन** पल क्षण **विराना** निर्जन **हिमानी** शीतल **रूमानी** मुलायम **विल्हण** प्रेमी का नाम **मसहरी** मच्छरदानी, पलंग **पश्मीना** बर्फीली कश्मीरी भेड़ विशेष के ऊन का नाम **चश्मा** झरना **शबनम** ओस **रुबाइयाँ** फारसी काव्य का एक प्रकार **कल्हण** मूल नाम कल्याण है जो कश्मीरी कवि हैं जिसने राजतरंगिणी काव्य की रचना की है, जिसमें कश्मीर के आरंभकाल से रचनाकाल तक के इतिहास का वर्णन है ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने नावों की नगरी किसे कहा है ?

(2) कश्मीरी हवा क्या गाती है ?

(3) जंगल में किन-किन के बीच होड़ लगी है ?

(4) कवि को चश्मे और फूल कैसे लगते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कश्मीर में सुबह किस तरह होती है ?

(2) कश्मीर की रक्षा के लिए कवि क्या कहते हैं ?

(3) कश्मीर में हवा चलने पर वातावरण कैसा होता है ?

(4) पश्मीना ध्वज से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(5) कवि ने कश्मीर को नावों की नगरी क्यों कहा है ?

3. निम्नलिखित प्रश्न का पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि कश्मीर दर्शन के लिए आह्वान देते हुए कश्मीर का कैसा चित्र प्रस्तुत करते हैं ?

4. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पवन, पंछी, चमन, आलम, मल्लाह, मौसम, मसहरी, शबनम

5. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द लिखिए :

घाटी, स्वर्ग, श्याम, मीठी, दूर

6. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाइए :

बर्फ, हिम, मखमल, स्वर्ग

योग्यता-विस्तार

- कश्मीर के दर्शनीय स्थानों के चित्रों का अलबम बनाइए ।
- कश्मीरी लोक कथाओं का संकलन पढ़िए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को कश्मीर की तरह भारत के अन्य दर्शनीय स्थानों के बारे में जानकारी दी ।
- 'कलापी' का कश्मीर दर्शन यात्रा वर्णन पढ़िए ।

●